B.com-II

Planning & Eco Development (S) | By, Sujeet Kr. Suman R.N.C. Hajipur

Q No- भारत में रेल यातायात की वर्तमान स्थिति एवं समस्याओं का वर्णन करें।

उत्तर

किसी भी अर्थव्यवस्था में परिवहन के साधनों का विशेष महत्त्व होता है। यों तो किसी देश का आर्थिक विकास मुख्यतः कृषि एवं उद्योगों की प्रगति पर निर्भर करता है लेकिन आर्थिक विकास में परिवहन के साधनों का भी महत्त्व कम नहीं होता। इसका कारण यह है कि देश में कृषि एवं उद्योगों की प्रगति बहुत हद तक परिवहन के विकास पर निर्भर करती है। अतः ठीक ही कहा गया है कि "यदि कृषि एवं उद्योग किसी राष्ट्र के शरीर तथा हड्डियाँ है तो परिवहन एवं संचार इसके स्नायुजाल है।" हम जानते है कि उद्योगों के लिए कच्चे माल, ईंधन, अनेक प्रकार की मशीनें आदि देश-विदेश से मँगानी पड़ती है और उद्योगों के तैयार माल को भी देश-विदेश में भेजना पड़ता है। इन सब कार्यों के परिवहन की आवश्यकता पड़ती है। भारत में परिवहन के मुख्यतः चार साधन है- रेल, सड़क, जलमार्ग एवं वायुमार्ग।

* भारत में रेलों का विकास → भारत में रेलमार्गों का विकास 19वी शताब्दी में हुआ है। सर्वप्रथम सन् 1845 ई० में लॉर्ड डलहौजी के शासनकाल में तीन रेलमार्गों की स्वीकृति दी गई। पहला रेलमार्ग ईस्ट इण्डियन रेलवे था जो कोलकता से रानीगंज तक 183 किमी० लम्बा था। यह रेलमार्ग सन् 1845 ई० में बनाया गया। दूसरा रेलमार्ग सन् 1853 ई० में ग्रेट इण्डियन पेनिनसुला रेलवे द्वारा मुम्बई से ठाणे के बीच 34 किमी० लम्बा बनाया गया। सन् 1854 ई० में मद्रास से कोलकता और रानीगंज के बीच 180 किमी० लम्बा रेलमार्ग बनाया गया। सन् 1856 में मद्रास से अरकोनम के बीच 70 किमी० लम्बा रेलमार्ग बनाया गया। सन् 1870 ई० में भारत में रेलमार्गों की लम्बाई 6840 किलोमीटर थी। सन् 1871 ई० तक कोलकता, मुम्बई और मद्रास रेलमार्ग द्वारा एक-दूसरे से जोड़े जा चुके थे। बाद में ये अमृतसर और कालीकट को भी रेलवे की एक शाखा द्वारा जोड़ दिये गये थे।

* भारत में रेलमार्गों की वर्तमान स्थिति → वर्तमान समय में भारतीय रेलें भारत का सबसे बड़ा उपक्रम हैं और एशिया में भारतीय रेलों का संगठन सबसे बड़ा तथा विश्व में यह दूसरा संगठन है। सर्वप्रथम मुम्बई और थाणे के बीच 16 अप्रैल 1853 ई० को पहली बार रेल यातायात का प्रारंभ भारत में किया गया था। अंग्रेज इंजीनियर जी० टी० क्लार्क ने भारतीय रेलों के विकास की योजना का निर्माण किया।

31 मार्च 2014 की स्थिति के अनुसार भारतीय रेलवे के पास 10,499 इंजन, 58,566 यात्री डिब्बे, 6792 अन्य सवारी गाड़ियों के डिब्बे और 2,45,267 माल डिब्बे हैं। देश में रेलवे स्टेशनों की संख्या 7,112 है।

भारतीय रेलों में यात्रा करने वाले यात्रियों की संख्या वर्ष 1950-51 में 128.4 करोड़ थी जो वर्ष 2013-14 में बढ़कर 839.7 करोड़ हो गई। भारतीय रेलवे 2018 ई० में विश्व के आठवाँ (8) सबसे बड़ा रोजगार के रूप में उभरा है जिसमें 1.308 मिलियन को रोजगार प्राप्त हुआ।

इस सार्वजनिक उद्योग की विशालता, राष्ट्रीय व्यापकता, विशिष्ट महत्ता एवं क्षेत्र विस्तार को देखते हुए प्रशासन प्रबंध, कार्यक्षमता एवं सुधार आदि के लिए एवं सभी स्तरों पर निरन्तर वास्तविक गतिशीलता तथा प्रगति बनाए रखने के लिए भारत सरकार ने रेल मंत्रालय के अधीन एक रेलवे बोर्ड स्थापित कर रखा है। सम्पूर्ण रेलमार्गों को इसके अधीन 18 रेल क्षेत्रों (Zone) तथा 73 डिविजन में बाँटा गया है। रेलवे बोर्ड के 18 जोन का क्षेत्र इस प्रकार है :-

क्र० सं०	जोन	मुख्यालय	कार्य प्रारंभ होने का वर्ष
1.	मध्य रेलवे (CR)	मुम्बई सीएसटी	5 नवम्बर, 1951
2.	पूर्वी रेलवे (ER)	कोलकाता	1 अगस्त, 1955
3.	उत्तरी रेलवे (NR)	नई दिल्ली	4 अप्रैल, 1952
4.	उत्तरी पूर्वी रेलवे (NER)	गोरखपुर	4 अप्रैल, 1952
5.	उत्तरी पूर्वी सीमाप्रान्त रेलवे (NEFR)	मालीगाँव - गुवाहटी	15 जनवरी, 1958
6.	दक्षिण रेलवे (SR)	चेन्नई	14 अप्रैल, 1951
7.	दक्षिण मध्य रेलवे (SCR)	सिकन्दराबाद	2 अक्टूबर, 1966

Scanned with CamScanner

क्रमांक	जोन	मुख्यालय	कार्य प्रारंभ होने का वर्ष
8.	दक्षिण पूर्व रेलवे (SER)	कोलकाता	1 अगस्त, 1955
9.	पश्चिम रेलवे (WR)	मुम्बई - चर्चगेट	5 नवम्बर, 1951
10.	पूर्व-मध्य रेलवे (ECR)	हाजीपुर	1 अक्टूबर, 2002
11.	उत्तर - पश्चिमी रेलवे (NWR)	जयपुर	1 अक्टूबर, 2002
12.	पूर्व तटवर्ती (coast) रेलवे (ECR)	भुवनेश्वर	1 अप्रैल, 2003
13.	उत्तर-मध्य रेलवे (NCR)	इलाहाबाद	1 अप्रैल, 2003
14.	दक्षिण - पश्चिमी रेलवे (SWR)	हुबली	1 अप्रैल, 2003
15.	पश्चिम-मध्य रेलवे (WCR)	जबलपुर	1 अप्रैल, 2003
16.	दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे (SECR)	बिलासपुर	5 अप्रैल, 2003
17.	कोलकाता मेट्रो रेलवे (KMR)	कोलकाता	25 दिसम्बर 2010
18.	दक्षिण-तटीय रेलवे (SCOR)	विशाखापट्टनम	2019

* भारतीय रेलों की प्रमुख समस्याएँ :—

(i) रेल-मार्गों की अपर्याप्तता → भारतीय रेल-जबलपुर एशिया में सबसे बड़ी है, फिर भी देश के क्षेत्रफल एवं जनसंख्या को देखते हुए यहाँ रेल-मार्ग अपर्याप्त है। यहाँ प्रति एक लाख व्यक्तियों के पीछे केवल 9 मील ही लम्बा रेल-मार्ग है, अत: देश में रेल-मार्गों के विस्तार की आवश्यकता है।

(ii) छोटी लाईनों को बड़ी लाईनों में बदलने तथा लाइनों को दोहरी करने की समस्या → भारत में प्राय: 50% रेल लाईनें छोटी है। अत: उन्हें बड़ी लाइनों में बदलने की समस्या है। इसके अतिरिक्त देश में अधिकांश लाइनें एकल-मार्गीय है जिससे गाड़ियों के आवागमन में असुविधा होती है। अत: लाइनों को दोहरी करने की भी समस्या है।

(iii) रेलों के लिए आवश्यक सामग्री की कमी :→ भारत में लोहा एवं इस्पात, स्लीपर, सीमेंट आदि रेलों के लिए आवश्यक सामग्री की भी कमी है। इससे रेलवे-विकास में बाधा पहुँचती है, अत: इन वस्तुओं में वृद्धि की जानी चाहिए।

Scanned with CamScanner

(iv) रेलों के प्रतिस्थापन एवं मरम्मत की समस्या → भारतीय रेलों में अधिकांशतः लाइनें, पुल, इंजन, डिब्बे आदि पुराने पड़ गये हैं। अतः उनके प्रतिस्थापन की समस्या है। इसके साथ रेलों की उचित मरम्मत की भी समस्या विद्यमान है।

(v) यात्रियों की भीड़ की समस्या → भारतीय रेलवे के समक्ष रेलों में बढ़ती हुई भीड़ की प्रमुख समस्या भी विद्यमान है। इस समस्या के समाधान के लिए यात्री एवं माल के डिब्बों तथा गाड़ियों में वृद्धि करने की आवश्यकता है।

(vi) बिना टिकट यात्रा → भारतीय रेलों में यात्रियों द्वारा बिना टिकट यात्रा करने की भी बुरी आदत फैली हुई है। इससे प्रतिवर्ष रेलवे को करोड़ों ₹ की हानि उठानी पड़ती है।

(vii) यात्रियों की सुरक्षा की समस्या → भारतीय रेलों में विशेषकर यात्रि को रात्रि के समय चोरी, डकैती, हत्या, बलात्कार आदि की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। अतः रेलों में यात्रा करना खतरनाक हो गया है और रेलवे के सामने समस्या यह है कि यात्रियों की सुरक्षा किस प्रकार की जाय।

(viii) हड़ताल एवं रेल-दुर्घटनाओं की समस्या → हाल के वर्षों में रेलवे कर्मचारियों द्वारा हड़तालों की संख्या बढ़ गयी है। आजकल रेल-दुर्घटनाओं की भी संख्या बढ़ गयी है जिससे प्रतिवर्ष सैकड़ों लोगों की जानें जाती हैं तथा सम्पत्ति की बर्बादी होती है।

(ix) रेल-सड़क प्रतियोगिता :- भारतीय रेलवे के समक्ष एक प्रमुख समस्या सड़क-यातायात के साथ इसकी बढ़ती हुई प्रतियोगिता भी है। इस समस्या के समाधान के लिए रेलवे एवं सड़क-यातायात के बीच समन्वय स्थापित करने की आवश्यकता है।

(x) यात्रियों की उचित सुविधाओं का अभाव

(xi) रेलवे-सम्पत्ति की क्षति एवं चोरी

(xii) विदेशी विनिमय की समस्या।

Scanned with CamScanner